सभ खे कालु कहारु, मारे अची ओचितो,
खंयो वञे खिण में, जुवानु बुढो अऊं ब्रारु,
छड्डे तमअ तन धन जी, तूं भी थी तियारु,
मतां करें इतिबारु, सामी विहें सुवास ते.

मनुष्य को चेतावनी देते हुए सामी साहब कहते हैं, ''हे मनुष्य ! काल (मृत्यु) महाभंयकर है, जो अचानक ही आकर जीवों को मार डालता है। निर्दयी काल पल भर में जवान, वृद्ध और बालक को उठाकर ले जाता है। मृत्यु किसी भी क्षण में आ सकती है। इसलिए तुम भी अपनी देह और धन का मोह त्याग कर मृत्यु के लिए तैयार हो जाओ। वह कभी भी आ सकती है। तुम अपने श्वासों पर कभी भरोसा/विश्वास मत करना।''

काल का अर्थ है यम, मृत्यु, मौत। काल नित्य और अनंत है। जीव के जन्म से लेकर उसके पीछे-पीछे चलने वाला काल ही होता है। अर्थात् काल सदा साथ रहता है। किसी को पता नहीं है कि आगे क्या होने वाला है। अपनी मृत्यु के संबंध में भी हम अनभिज्ञ होते हैं। कब, कहाँ कैसे काल आकर हमें दबोच लेगा, इसकी सुध किसी को नहीं है। यमदूत अचानक ही आ जाते हैं। और जीव को मारकर घसीट कर ले जाते हैं। यम/काल किसी को नहीं छोड़ता। राजा हो या रंक, योद्धा हो निर्बल, सामान्य हो या सज्जन मनुष्य, बूढ़ा हो या जवान, कोई भी काल/मृत्यु के चँगुल से बच नहीं सकता। मृत्यु मानो यमराज की कठोर छड़ी है, जिसकी मार सब प्राणियों पर पड़ती है। मौत किसी की परवाह नहीं करती और न ही किसी पर दया करती है। जिसने भी जन्म लिया है, उसके भाग्य में मृत्यु अवश्य ही लिखी हुई होती है। सभी प्राणी मर्त्य हैं, इस कारण धरती को 'मृत्युलोक' भी कहा गया है। कहा जा सकता है कि मनुष्य के जन्म के साथ उसकी मृत्यु भी साथ में जन्म लेती है और जो जीवन के अंत तक उसके साथ रहती है। अत: इस यथार्थ को समझकर अपना जन्म सफल/सार्थक करने का प्रयत्न करना चाहिए। मृत्यु आने के पहले मर कर मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। आत्मज्ञान, स्वस्वरूप ज्ञान और भक्ति से यह संभव हो सकता है।

इसी तथ्य को समझाते हुए सामी साहब ने भी मनुष्य मात्र को सचेत किया है। रहीम के शब्दों में,

सदा नगारा कूच का, बाजत आठों याम।
रहिमन जग में आइकै, को करि रहा मुकाम।।

■